...मा टालस्टाय

१६

हिन्दी पुस्तक एजेन्सी

महात्मा टाल्स्टाय

लेखक

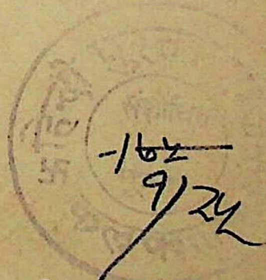
श्री विश्वनाथ राय एम० ए० एल-एल० बी०



प्रकाशक

हिन्दी पुस्तक एजेन्सी

ज्ञानवापी, बनारस



तृतीय बार] जून १९५४ [मूल्य ।≡)

प्रकाशक—
हिन्दी पुस्तक एजेन्सी
ज्ञानवापी, बनारस

शाखाएँ—
२०३, हरिसन रोड, कलकत्ता
बांकीपुर , पटना ।

मुद्रक—
पपुलर आर्ट प्रिन्टर्स
१, मुक्तारामबाबू सेकेण्ड लेन,
कलकत्ता-७



दो शब्द

महात्मा टाल्स्टाय सदृश महान्-आत्मा संसारमें कभी-कभी हुआ करते हैं। महात्मा गांधीने अपनी जीवनीमें लिखा है कि टाल्स्टायके लेखों और उपदेशोंका उनके ऊपर बड़ा ही प्रभाव पड़ा है। गांधीजीसे टाल्स्टाय-की आपसी भेंट तो नहीं हुई थी, परन्तु गांधीजी उन्हें अपना गुरु समझते थे और उनके साथ पत्र-व्यवहार भी करते थे। महात्मा टाल्स्टायका-सा साधु-जीवन बहुत ही कम होता है। टाल्स्टायका स्मरण करते ही गांधीजीका चित्र आंखोंके सामने नाचने लगता है। क्या ही अच्छा होता कि हमारे देशवासी इन दो महा-त्माओंके जीवन-क्रमको अपने जीवन-क्रममें परिणत करनेकी चेष्टा करते! भारतका उद्धार राजनीतिक-स्वराज्यसे भी नहीं होगा, बल्कि राजनीतिक-स्वराज्यका प्राप्त होना हमारे आत्म-बलपर निर्भर करता है। हमारे

देशका नैतिक-अधःपतन इतना गहरा हो चुका है कि भारतको आज केवल नैतिक-बल प्रदान करनेकी आवश्यकता है। नैतिक-बल प्रदान करनेके लिये इन दो महात्माओंका जीवन-चरित्र ही अखाड़ा है।

प्रार्थी—

—विश्वनाथ राय

महात्मा टाल्स्टाय



बाल्यकाल

टाल्स्टायका जन्म २८ अगस्त १८२८ ई० को यास्नया पोलयाना नामक स्थानमें, जो रूसकी प्रसिद्ध राजधानी मास्कोसे प्रायः ६० कोसपर है, हुआ था। इनके पिताका नाम निकोलस टाल्स्टाय था। वे बड़े योग्य और परिश्रमी पुरुष थे। जब निकोलस सेनामें भर्ती हुए थे तब उनकी उम्र केवल सोलह वर्षकी थी। थोड़े ही दिनोंके बाद फ्रांसीसियोंसे युद्ध होनेमें ये गिरफ्तार कर लिये गये। कुछ दिनोंके बाद जब फ्रांसीसियोंके पंजेसे छूटे, तब उन्होंने फौजकी नौकरीसे इस्तीफा दे दिया। इधर अपने पिताके मरनेसे जमींदारीका भी भार उनपर आ पड़ा। इनका व्याह राजकुमारी मेरीसे हुआ था। इस विवाहके कारण इनको अच्छी-सी जमींदारी मिल गयी थी। निकोलसका स्वभाव बड़ा कोमल था।

रूसके जमींदारोंका अत्याचार तो बड़ा ही प्रसिद्ध है। पर निकोलस उन जमींदारोंमें नहीं थे जो अपनी प्रजापर अत्याचार करते थे।

मेरीका स्वभाव भी बड़ा कोमल था। वह अपने बच्चोंकी स्वयं देख-रेख रखती थीं। इन्हें पांच बच्चे थे। काउण्ट लिओ टाल्स्टाय सबसे छोटे थे। जब टाल्स्टायकी अवस्था तीन वर्षकी थी तभी इनकी माताका स्वर्गवास हो गया और नव वर्षकी अवस्थामें इनके पिताका भी देहान्त हो गया। माताके मर जानेपर टाल्स्टायका पोषण भार यरेनोंवना नामक धाय तथा कियोडर रमल नामक जर्मनके हाथमें दिया गया। टाल्स्टायकी एक चाची थी जो इनके पिताके मरनेपर इन लोगोंके घरकी देख-रेख करती थी। यह स्त्री रात-दिन संसारके सुखभोगमें लीन रहती थी। परन्तु टाल्स्टायकी एक और बुआ थी, जो टाल्स्टायको बहुत प्यार करती थी। उसका स्वभाव मेरी जैसा था। बड़े ही कोमल स्वभावकी स्त्री थी। उसके चरित्रका प्रभाव टाल्स्टायके ऊपर विशेष रूपसे पड़ा था। टाल्स्टायके दुर्भाग्यसे उसका भी देहान्त हो गया।

इनकी चाचीका स्वभाव बड़ा ही विचित्र था। प्रतिदिन वह अपने मित्रोंको दावतें दिया करती थी। दिनरात नाच गाना हुआ करता था। इस प्रकार टाल्स्टायके पिताका धन पानीमें बहने लगा। इसका प्रभाव बच्चोंपर पड़े बिना रह नहीं सकता। टाल्स्टाय भी बाल्यावस्थामें इनमें शरीक होते थे, हँसी-दिल्लगी देखते थे।

टाल्स्टायके भाइयोंमें आपसमें बड़ा प्रेमभाव रहता था। बड़े भाई अपने छोटे भाइयोंको हर तरहसे खुश रखते थे। अपने मनकी बनाई हुई किस्से-कहानियां सुनाकर अपने छोटे भाइयोंका मनोरंजन करते थे। कहा-नियां प्रायः खेलके रूपमें होती थीं। टाल्स्टायने अपनी डायरीमें लिखा है कि एक बार उनके बड़े भाईने चीटियोंके आपसमें मिलकर रहनेका जो आदर्श है, उसे बच्चोंके खेलके रूपमें बतलाया था। चीटियोंके भाईचाराका खेल इन्हें बड़ा पसन्द आया था। यह एक छोटी-सी बच्चोंके मनोरञ्जनकी चीज थी, परन्तु इसमें कितना जबर्दस्त सिद्धान्त छिपा हुआ था। टाल्स्टाय-

ने लिखा है कि इस खेलका उनके ऊपर बड़ा अच्छा प्रभाव पड़ा था।

टाल्स्टायने अपने दो और भाइयोंके विषयमें भी लिखा है। इससे यह पता लग जाता है कि टाल्स्टायमें भ्रातृप्रेमका कितना भाव वर्त्तमान था। डिमेट्री इनके दूसरे भाई थे। इनको वह अपना मित्र मानते थे। निकोलस इनके बड़े भाई थे। तीसरे भाई सर्जिअसकी तो वह पूजा करते थे। सर्जिअसकी तरह वह अपने जीवनको बनाना चाहते थे। उनसे प्रेम करते और उनके गुणोंका अनुकरण करते। सर्जिअसका शरीर बड़ा सुन्दर और गठीला था। टाल्स्टाय मन-ही-मन उसकी बड़ी प्रशंसा किया करते थे। वह उनके संगीत, चित्रकला तथा निश्छल अभिमानकी सदैव प्रशंसा किया करते थे। टाल्स्टाय स्वयं भी अपने विषयमें सावधान रहते थे। वह सदैव जाननेकी इच्छा करते थे कि दूसरे उनके विषयमें क्या कहते और सोचते हैं। कभी इनके विचार ठीक होते और कभी गलत। अपने

विषयमें दूसरोंके विचार जानकर इन्हें बड़ा दुःख हुआ करता था।

टाल्स्टाय लड़कपनसे ही एकान्तमें बैठकर मन ही मन कुछ सोचते और विचारते। साथियोंसे अलग होकर किसी बातके ध्यानमें लग जाते और घंटों सोचा करते। इस तरह एक दिन सोचते-सोचते उनके मनमें यह बात आई कि जब एक दिन मरना ही है तो जबतक जीयें तबतक सुखपूर्वक जीना चाहिये। ऐसा सोचकर अपनी पाठ्य-पुस्तक फेंक दी और बिस्तरेपर सो रहे। तरह तरह-की मिठाइयां खाने तथा किस्से और कहानियोंके पढ़नेमें दिल लगाने लगे।

टाल्स्टाय व्यायाम भी करते थे। खेल-कूदमें भी भाग लेते थे। उन दिनों रूसमें धनी आदमियोंके लड़के गरीबोंके लड़कोंके साथ खेलने नहीं पाते थे। अतः टाल्स्टाय अपने घरके आसपास रहनेवाले गरीब बच्चोंमें मिल नहीं सकते थे। टाल्स्टाय अकेले ही व्यायाम वगैरह कर लिया करते थे। व्यायामसे उनका शरीर बड़ा सुन्दर और गठीला हो गया था। व्यायाम करनेसे टाल्स्टाय-

का स्वास्थ्य बहुत अच्छा रहता था और इसी कारण वे बहुत दिनोंतक जीवित रह सके। अन्ततक इनमें कार्य करनेकी शक्ति थी।

बाल्यावस्थासे ही इन्हें धर्मसे प्रेम था। इनके पिता निकोलस ईसाई मतकी कैथोलिक पद्धतिमें विश्वास रखते थे। अपने पिताके साथ नियमपूर्वक बालक टाल्स्टाय गिरजाघर जाया करते थे। समय मिलता तो दूसरोंके साथ भी जाते। प्रेम और भक्तिसे उपदेशोंको सुनते और उन्हें सुनकर हृदयमें तर्क-वितर्क करते। उसके अनुसार अपने जीवनको बरतनेकी कोशिश करते। इस तरह टाल्स्टाय एक भावुक पुरुष थे। उपदेशोंको सुनकर उसे भुला देना नहीं जानते थे। तद्वत् आचरण करके अपने जीवनको उत्कृष्ट बनाना चाहते थे। ईसा मसीहमें उनकी बड़ी भक्ति थी। छोटेपनमें बोए हुए बीज ही आगे चलकर फलते और फूलते हैं।

शिक्षा

सभी भाई बड़े हो चुके थे। इनके पढ़नेका प्रबन्ध

होना आवश्यक था। अतः सभी लोग मास्को चले गये। केजांका विश्वविद्यालय खासकर अमीरोंके लड़कोंके लिये बना था। इनके और भाई केजांके विश्वविद्यालयमें भर्ती हो गये। कुछ दिनोंके बाद टाल्स्टायका भी नाम केजांके विश्वविद्यालयमें लिखा दिया गया। यहां देशके अमीरों-के लड़के पढ़ते थे। उनके ऊपर किसी तरहकी कड़ाई नहीं थी। वे अपने मनसे पढ़ते और मौज करते थे। परीक्षा पास करनेकी उन्हें कोई विशेष चिन्ता नहीं रहती थी। जो विद्यार्थी जिस विषयको लेना चाहता था वह ले सकता था। केजां नगर भी बड़ा अच्छा था। वहांपर अच्छे-से-अच्छे होटल, नाटक, नाचघर और कलागृह थे। बड़े-बड़े आदमियोंके शौकीन लड़के बड़ी स्वच्छन्दताके साथ उसमें आते-जाते थे। इस प्रकार आमोद-प्रमोदकी सभी सामग्रियां उसमें मौजूद थीं। इनका विद्यार्थी जीवन केवल नाममात्रका था।

टाल्स्टायका मन पढ़नेमें नहीं लगता था। चाचीके सङ्गसे इन्हें भी नाच-गानेका शौक हो चुका था। इसलिये जब इनका नाम विश्व-विद्यालयमें लिखवाया गया तो

ये बजाय पढ़नेके आमोद-प्रमोदके उपाय सोचने लगे। इन्होंने अनेक विद्यार्थियोंको अपना साथी बनाया। मनोरञ्जनके लिये पूरी स्वतन्त्रता थी। क्लासमें शायद ही कभी बैठते। प्रायः कालेजसे गायब रहते। कालेजके समयमें कहीं होटलमें बैठकर मौज करते थे। जब इस प्रकार कालेजसे अनुपस्थित रहने लगे, तब एक बार गैरहाजिर होनेके अपराधमें कालेजके जेलमें बन्द कर दिये गये। फ़िर भी इनकी वह आदत नहीं गई। परीक्षामें बहुत कम नम्बर आता था। इस समय उन्होंने एक बहुत महत्वपूर्ण काम करना प्रारम्भ किया। इन्होंने डायरी लिखनेका अभ्यास किया। इस क्रमको बहुत दिनोंतक जारी रखा। उनकी वह डायरी छप गई है, उस डायरीसे उनके जीवनकी बहुतसी बातें मालूम होती हैं।

विद्यार्थी जीवनमें भी उन्हें अपनी अवस्थाका ज्ञान था। अपनी भलाई और बुराईको अच्छी तरह समझते थे। वह समझते थे कि मनुष्यको किस कामसे दिलचस्पी रखनी चाहिये और किस कामसे अन्यमनस्क

होना चाहिये। अपनी डायरीमें टाल्स्टायनें लिखा है कि वह अपनेको बहुत सुधारना चाहते थे। वे अपनी पढ़ाई-में जितना ध्यान और परिश्रम लगाना चाहते थे उतना नहीं कर सकते थे। जिस कामको करनेका जी चाहता था उसे करते थे, परन्तु उसे भी पूर्णरूपसे न कर पाते। स्मरणशक्ति भी कुछ कम हो चली थी। अपनी डायरीमें उन्होंने कुछ नियमोंको लिख रखा था, जिसके अनुसार वह अपने विद्यार्थी जीवनको ठीक तरहसे ले चलना चाहते थे। उन नियमोंके थोड़ेसे अंश इस प्रकार हैं—जिस कार्यको करनेका निश्चय हो चुका हो उसे अवश्य ही पूरा करना चाहिये। जो कुछ किया जाय, वह अच्छी तरह किया जाय। यदि कोई चीज भूल गई हो तो उसे तुरन्त पुस्तकमें नहीं देख लेना चाहिये, बल्कि अपनी स्मरण-शक्तिको बढ़ानेकी नीयतसे भूली हुई चीजको याद करनेका प्रयत्न करना चाहिये। मस्तिष्कसे जितना काम हो सके उतना करना चाहिये। पढ़ते समय जोरसे पढ़नेसे पाठ अधिक स्मरण होता है। अध्ययन करते समय यदि कोई विघ्न डाले तो उसे

साफ शब्दोंमें कह देना चाहिये। उसे पहले संकेत द्वारा कह देना अच्छा होगा। यदि संकेतके द्वारा भी बात समझमें न आवे तो क्षमा मांगते हुए कह देना हितकर होगा।

बाल्यकालकी तरह ही विद्यार्थी जीवनमें भी बहुत सोचा-विचारा करते थे। अब तो ज्यों-ज्यों ज्ञान होने लगा, त्यों-त्यों और भी सोचने-विचारनेकी शक्ति बढ़ती गई। कभी-कभी उनके मनमें ऐसा विचार आया करता था कि शायद वह आगे चलकर कुछ ऐसा काम करेंगे जिससे उनके देशवासी तथा संसारके लोग उन्हें एक बड़ा आदमी समझेंगे। कभी-कभी ऐसा भी सोचते थे कि कोई ऐसा काम वह ढूँढ़ निकालेंगे जिससे संसारके प्राणियोंका भला होगा।

उन्हें अन्य भाषाओंके जाननेका भी शौक था। अतः पूर्वी भाषाओंमें अरबी और तुर्की पढ़नेका विचार करने लगे। परन्तु थोड़े ही दिनोंके बाद ये भाषाएं अच्छी न जान पड़ीं, अतः इन्हें छोड़कर कानूनका अध्ययन आरम्भ किया। कानून पढ़ानेके लिये एक जर्मन

अध्यापक था जो इन्हें रूसी भाषामें अच्छी तरह समझा नहीं सकता था, इसलिये कानूनका पढ़ना भी प्रायः समाप्त हो गया। इतिहास पढ़नेका विचार हुआ। इतिहास पढ़ने लगे। कुछ दिनोंतक इसमें मन लगाया। परन्तु थोड़े ही दिनोंके बाद इनके मनमें यह विचार आया कि मरे हुए लोगोंके वृत्तान्त पढ़नेसे क्या लाभ है? इसलिये इसको भी छोड़ दिया। धर्मशास्त्र पढ़ना आरम्भ किया। यों तो बचपनसे ही वे धर्मके बड़े प्रेमी थे, परन्तु अब वे विचार बदल गये और उन्होंने देखा कि दुनियामें जितने धार्मिक पुरुष हैं, वह भी पाप किया करते हैं। दूसरोंकी चीजोंपर अपनी आखें लगाते हैं। वास्तवमें बहुत धार्मिक बननेवाला धर्मकी अवहेलना करता है। जो पहले धार्मिक थे, उनमें कितने नास्तिक हो गये। इसलिये उन्हें धर्मकी महिमामें विश्वास न रहा। अतः इसका भी अध्ययन छोड़ दिया।

अब इनके दिमागमें एक प्रकारकी बेचैनी-सी रहने लगी। किसी काममें तबीयत नहीं लगती थी। पढ़ाई-

से जी बिल्कुल उचट गया। एक तरहसे परेशान-सा रहने लगे। इधर स्वास्थ्य भी कुछ खराब हो चला। अतः पढ़ाई छोड़ देनेके विचारसे विश्वविद्यालयके अधिकारियोंसे आज्ञा मांगी। कालेज छोड़ देनेके लिये हुक्म मिल गया। पढ़ाई छोड़ देनेके बाद वे अपने भाईके साथ अपनी जमींदारीपर चले आये।

जमींदारीका प्रबन्ध

बाप-दादाकी जायदाद काफी थी। जमींदार थे। समझते थे कमी किस बातकी है। पढ़ने लिखनेसे लाभ ही क्या है? यह सब धन कमानेके लिये ही होता है, धनकी कमी थी नहीं। मान और मर्यादा धनसे सुलभ है। सोचा कि चलकर अपनी जमींदारीमें रहें। पढ़ना-लिखना छोड़ जमींदार हो गये। अब किसानोंके साथ रहने लगे। रूसके किसानोंकी अवस्था बड़ी दयनीय थी। जमीन किसान जोतते थे। परन्तु उस जमीनपर उनका कोई अधिकार नहीं था। जमीनका लगान बड़ी कड़ाईसे वसूल होता था। कुछ किसान तो बतौर गुलामके

जमींदारोंके फर्मपर काम करते थे। खानेके लिये कुछ मजदूरी मिल जाती थी, परन्तु वह भी पूरी नहीं मिलती थी। तन ढांकनेके लिये वस्त्रोंकी भी कमी थी। बहुधा किसान चिथड़े लपेटे रहते थे। रूस जैसे ठण्ढे देशमें किसानोंके लड़के नंगे रहते थे। शिक्षासे तो बिल्कुल भेंट नहीं थी। किसानोंमें बहुधा बीमारियां हुआ करती थीं। बहुत बड़ी संख्यामें किसान मर जाते, परन्तु उनके लिये औषधिका प्रबन्ध नहीं होता था। अधिकारियों और जमींदारोंके अत्याचारसे बराबर अकाल पड़ा करता था। टाल्स्टाय जब केजांके विश्वविद्यालयमें पढ़ते थे तभी अकालके विषयमें उन्होंने सुना था। वहींसे उन्होंने मनमें यह निश्चय कर लिया था कि जमींदारीमें चलकर गरीब किसानोंकी सेवा करेंगे। जिस साल टाल्स्टाय पढ़ाई छोड़कर गांवमें आकर रहने लगे थे, उस समय बड़ा भयंकर अकाल पड़ा। अन्न काफी पैदा नहीं हुआ था। थोड़े ही दिनोंके बाद प्रजा भूखके मारे मरने लगी। टाल्स्टायने किसानोंकी सहायताका प्रबन्ध किया। परन्तु रूसके जमींदार अथवा धनीवर्ग किसानोंपर इतना अत्या-

चार करते थे कि किसानोंको यह विश्वास नहीं होता था कि कोई जमींदारका लड़का उनकी विपत्तिमें सक्रिय सहानुभूति दिखलायेगा। लोग समझने लगे कि टाल्स्टाय धूर्त है। इस तरह किसान टाल्स्टायसे बहुत फायदा नहीं उठा सके। उधर अधिकारी वर्ग तथा दूसरे जमींदार टाल्स्टायके कार्यसे प्रसन्न नहीं थे। अतः टाल्स्टाय इस कार्यको छोड़कर सेण्ट पिटर्सवर्गके कालेजमें पढ़नेके लिये फिर भर्ती हो गये। परन्तु पढ़नेमें जी नहीं लगा। घर चले आये। इस बार अपना समय खेल-कूद तथा नाच-गानेमें बिताने लगे। शिकारमें बड़ी दिलचस्पी लेते थे। कभी महीनों जुआ ही खेलते। संगीत और नृत्यका भी शौक था। इस तरह आमदनीसे ज्यादा खर्च होने लगा। घर रहना कठिन हो गया।

इनके बड़े भाई कालेजकी शिक्षा समाप्त करके सेना विभागमें अफसर हो गये थे। वह रूसके दक्षिणी प्रान्त काकेशसमें भेजे गये थे। कुछ दिनोंके लिये छुट्टी लेकर घर आये थे। टाल्स्टाय अपनी पढ़ाई छोड़कर व्यर्थ अपना समय गँवा रहे थे। दुष्टों और आवारोंका संग हो गया

था। निकोलसने देखा कि यदि टाल्स्टायका इन दुष्टोंसे संग न छुड़ाया गया, तो थोड़े दिनोंके बाद टाल्स्टायकी हालत खराब हो जायेगी और वह हाथमें न आयेगा। इसलिये छुट्टी समाप्त होनेपर वे टाल्स्टायको भी अपने साथ लेते गये।

सैनिक जीवन

टाल्स्टाय अपने भाईके साथ काकेशसके निकट स्टारीयुर्ट नामक जगहमें गये। स्वास्थ्यके लिए वह एक उत्तम स्थान है। स्वास्थ्य सुधारनेके लिए वहां बहुत लोग आया-जाया करते थे। टाल्स्टायको यह स्थान अच्छा मालूम हुआ। यह एक सुन्दर दृश्यवाला पर्वत-मालाओंसे घिरा हुआ वन प्रदेश था। इस सुन्दर स्थान-पर एक कुटिया बनाकर कज्जाक नामक पहाड़ी लोगोंके बीचमें वे रहने लगे। यहां उनका जीवन सादा हो गया। उन्होंने यहांपर अपना अध्ययन भी जारी रखा। लेकिन बेकार बैठनेसे आखिर तबीयत कितने दिन लग सकती है। इसलिये इनके भाईने इन्हें टिकलिसके मिलिटरी

कालेजमें भर्ती करा दिया। थोड़े दिनोंमें यहांकी परीक्षा पास कर लेनेपर यह तोपखानेमें भर्ती हो गये। उन दिनों कोकशियामें सर काशियन नामक एक जाति रहती थी जो सदा लूटमार किया करती थी। उनको दवानेके लिये फौजकी छोटी टुकड़ियां भेजी जाती थीं। इन्हीं टुकड़ियों-में कभी टाल्स्टाय भी भेजे जाते थे। युद्धके दृश्योंको देखकर उनका हृदय कांप उठता था। निदान युद्ध-जीवन-से भी इनका दिल ऊब उठा। आपने अपना त्यागपत्र उच्च अधिकारीके पास भेज दिया। परन्तु अभी उनका त्यागपत्र स्वीकृत नहीं हुआ था कि क्रिमियामें लड़ाई छिड़नेका समाचार आ गया। इनमें देशभक्तिकी लहर जाग उठी और इन्होंने अपना त्यागपत्र वापस ले लिया। १८५४ के नवम्बर मासमें सिवास्टोपोल नामके किलेमें फौजके साथ पहुँच गये। इस किलेको अंग्रेजों और फ्रां-सीसियोंने घेर लिया था। रूसी लोगोंने इस किलेकी बहुत बहादुरीके साथ रक्षा की। बारह महीनेतक घेरा पड़ा रहा। इस युद्धमें टाल्स्टायने बड़ी वीरताका काम किया। उनकी वीरताका बखान सभी लोग करते थे।

टाल्स्टायने सिपाहियोंको उत्साहित करनेमें बड़ा काम किया था।

क्रिमियाका युद्ध बड़ा ही भयंकर था। इस युद्धमें बहुत लोग मारे गये थे। घायल सिपाहियोंकी दर्दनाक आवाजको सुनकर उनका हृदय भर आता था, किसी स्थानमें रूसी लोगोंकी जीत हुई थी। उस जीतकी खुशी-में एक बड़ी दावत हुई। टाल्स्टाय भी वहाँ गये। परन्तु उस युद्धमें दोनों तरफके इतने सिपाही हताहत हो गये थे कि टाल्स्टायका मन बिल्कुल सिहर उठा था। उस आनन्दोत्सवमें वह अपनेको मिला न सके। उत्सवके बीच हीमें उठकर सिवास्टापोल चले आये। उस युद्धमें इन्होंने बड़ी बहादुरी और धैर्यके साथ काम लिया था। वे अपना बहुत अधिक समय घायलोंकी सेवामें लगाया करते थे।

सैनिक जीवनके साथ ही टाल्स्टायके लेखक जीवन-का भी आरंभ होता है। जब वह फौजमें भर्ती हुए उसी समयसे उनके मनमें जो विचार उउते थे उन्हें वे लिख लिया करते थे। उस समयके अपने लेख वे 'बचपन'

नामसे सोव्रेमेनिक नामक पत्रमें प्रकाशित करने लगे। इसको उस पत्रके सम्पादकने बहुत पसन्द किया। इससे टाल्स्टायको बहुत उत्साह हुआ और वे बड़ी लगनके साथ अपने सैनिक कामोंसे समय निकाल कर लिखने लगे। 'बचपन' के बाद उन्होंने 'जमीन्दारका सवेरा', 'लड़कपन और जवानी' नामक लेख लिखे। जनतामें इन लेखोंका बड़ा आदर हुआ। इससे उनका उत्साह दूना हो गया। उनके लिखनेका शौक दिनोंदिन बढ़ने लगा। लिखनेमें वे इतने दत्तचित्त हो गये थे कि सिवास्टोपोलके किलेपर जब शत्रुओंने घेरा डाल रखा था और चारों तरफसे गोलाबारी होती रहती थी तब भी लिखा करते थे। उस समयकी उनकी लिखी हुई कहानियां 'सिवास्टोपोलकी कहानियां' के नामसे प्रसिद्ध हैं। इनको भी रूसी जनता-ने बहुत पसन्द किया। इनकी कहानियोंको रूसके सम्राट्ने भी पसन्द किया और उसने वहांके फौजी अफ-सरको लिख भेजा कि यह नौजवान खतरेके स्थानपर न रखा जाय।

टाल्स्टायने अपनी डायरीमें उस समयका हाल

लिखा है। वह डायरी बड़ी ही महत्वपूर्ण है। एक छोटी-सी घटना है, जो उनके जीवनमें होनेवाले महान् परिवर्तन की परिचायक है। युद्धमें गुरुतर कार्यके भारसे उनकी तबीयत कुछ खराब रहने लगी थी। कुछ जुआ आदिकी तरफ भी झुकाव हो गया था। इन कारणोंसे वे अन्य-मनस्क रहा करते थे। जब उनकी तबीयत सुधरने लगी, तो एक आकस्मिक परिवर्तन होनेके कारण इन्होंने ५ मार्च सन् १८५५ ई० की डायरीमें यह बात नोट की—

"आज कुछ साथी मिले हैं। कल भक्ति और ईश्वरत्वके विषयमें विवाद हुआ। इस विवादसे मेरे मनमें उस वस्तुको समझनेका आभास उत्पन्न हुआ, जिसे मैं प्राप्त करनेकी कोशिशमें हूँ वह आभास है, एक ऐसे धर्मकी उत्पत्ति, जो मनुष्यता और अर्वाचीन विकासके अनुकूल हो, ईसाके धर्मका संशोधित संस्करण जिसमें मिथ्यात्व और रहस्यवादका स्थान न हो, तथा जो संसारको शांति-का सन्देश सुनावे, मैं समझता हूँ, उस विचारको पूरा करनेके लिये सदियोंके सतत प्रयत्नकी आवश्यकता होगी। एक पीढ़ी दूसरीको पाठ देगी, और किसी दिन

कट्टरता या मनुष्यकी सहज तर्क बुद्धि इसे स्वीकार करेगी। धर्मके द्वारा मनुष्य मात्र समझ-बूझकर, एकताके सूत्रमें बँधें—मेरे मनमें यह भावना मुख्य रहेगी।"

कोई भी मनुष्य, जो टाल्स्टायकी उक्त तिथिके बादका पच्चीस वर्षोंका जीवन जानता है, इस बातकी कल्पना कर सकता है कि शायद उनके वे विचार साधारणतः परिवर्तित विचारोंके केवल रूपमात्र रहे हों, परन्तु उनके जीवनके अन्तिम तीस वर्ष यह बतलाते हैं कि उपरोक्त विचार रूपी जो बीज उनके मनमें उगे थे, वे आगे चलकर पूर्णतः फलीभूत हुए—क्योंकि सन् १८८० ई० के बाद उनका समस्त जीवन उसी उद्देश्यमें लग गया, जिसका आभास उन्हें ४ मार्च सन् १८५५ ईस्वीको ब्रीनेब्स्कीसे वार्तालाप करते समय मिला था।

इस युद्धमें अंग्रेज और फ्रांसीसी जीत रहे थे। टाल्स्टायने इस युद्धमें खूब भाग लिया था। अनेक अवसरोंपर इन्होंने सेवस्टापोलपर छापा मारा और अन्तिम बार २७ अगस्तको उन्होंने मालाखोव नामक स्थानको फ्राँसीसियोंके हाथमें जाते देखा, जिसके

बाद सेवस्टापोलकी रक्षा असम्भव हो गई। सेवस्टा-के इस अन्तिम धावेपर टाल्स्टायने अपनी फूफीको ४ सितम्बर, १८५५ ईस्वीके दिन पत्र लिखा। वह पत्र बड़ा ही हृदयग्राही और उनके होनेवाले जीवन-परिवर्तनका आभास था। "२७ तारीखको सेवस्टापोलमें एक बड़ा और गौरवपूर्ण युद्ध हुआ। मेरा दुर्भाग्य या सौभाग्य उसी दिन वहां पहुंचनेका था, जिस दिन लड़ाई छिड़ी थी, जिससे मैं लड़ाई देखनेके अतिरिक्त एक स्वयंसेवकके रूपमें उसमें कुछ भाग ले सका। घबराना मत, मुझे मुश्किलसे किसी खतरेका अन्देशा था। २८ तारीख (मेरा जन्म दिन) मेरे जीवनमें दूसरा मौका था, जब मैंने ऐसा दुःखद और स्मरणीय दिन बिताया—पहली घटना अठारह वर्ष पूर्व हुई थी। वह शोक था—चाची अलैग्जेण्ड्रिया इलिनिश्नाकी मृत्युका, और यह शोक है, सेवस्टापोलके हाथसे निकल जानेका। जिस समय मैंने इस नगरको प्रज्ज्वलित अग्नि-शिखाओंके बीचमें भस्म होते देखा और अपने बैस्टिनपर फ्रांसीसी झण्डे और फ्रांसीसी सेनानायकपर मेरी दृष्टि

गई, मैं विवश हो रो पड़ा।....गत कई दिनोंसे मेरे मनमें बारबार विचार उत्पन्न हो रहे हैं कि सेनासे पृथक् हो जाऊँ।"

इनकी लेखन कलाको देखकर सेवस्टापोलके युद्धके बाद सेनानायकोंने युद्धका पूरा वृत्तान्त तैयार करनेका भार टाल्स्टायको दिया। इसी हुक्मके अनुसार इन्होंने रिपोर्ट तैयार की और रिपोर्ट लेकर यह सेंट पिटर्सवर्ग भेजे गये।

सेंट पिटर्सवर्ग पहुँचनेपर इनका बड़ा स्वागत हुआ। इसकी इनको तनिक भी आशा न थी। इनकी लेखनीने इनकी प्रतिभाको लोगोंके सामने प्रकट कर दिया था। सभी लोग इनसे प्रभावित हो गये थे। इनके स्वागतमें सभी तरहके लोगोंने भाग लिया। इनकी लेखन शक्तिकी सभीने प्रशंसा की। उस समयका रूसका सबसे बड़ा लेखक तुर्गनेव समझा जाता था। उसने भी टाल्स्टायके स्वागतमें भाग लिया और उन्हें अपने घरपर लिवा ले गया। इसी तरह और लोग

टाल्स्टायको अपने घरपर बुलाकर उनकी दावत करने लगे।

१८५५ ईस्वीके अन्तमें टाल्स्टायको तरक्की मिली, और वे सब—लेफ्टिनेंटके पदपर नियुक्त हुए। मार्च सन् १८५६ ईस्वीमें ही वे लेफ्टिनेंट भी बना दिये गये। यही उनका आखिरी आदेश था। पिटर्सवर्गमें उन्हें सैनिक बमोंके कारखानेका निरीक्षण सौंपा गया था। उन्होंने नौकरीसे त्यागपत्र दे दिया, किन्तु त्याग-पत्र मंजूर नहीं हुआ। इसके बदले इन्हें ग्यारह महीने-की छुट्टी मिल गई और अन्तमें इनका त्यागपत्र भी स्वीकृत हो गया।

इसमें सन्देह नहीं कि टाल्स्टाय एक अच्छे अफसर थे। अन्य ख्यातियोंके साथ इन्होंने पितृदेशकी सेवा करनेका गौरव भी प्राप्त किया। तुर्की युद्धके समय ये कुछ दिनोंके लिये स्टाफमें ले लिये गये थे और वहां तथा क्रीमियामें, उन्हें जो काम सौंपे गये 'थे, उनकी पूर्ति बड़ी सावधानीके साथ की। इनकी इच्छा मुख्य मोर्चेसे हटकर मामूली सेवाओंमें लगे रहनेकी नहीं

थी, बल्कि खतरेसे बचनेके बजाय उसे खोजा करते थे। काकेशसके युद्धके समयमें और उसके बाद भी उन्होंने अपनी इच्छासे मोर्चोंमें भाग लेनेकी आज्ञा मांगी और क्रीमिया युद्धमें जब वे सेवस्टापोलमें थे, घेरेके लिये उन्होंने स्वेच्छापूर्वक अपनी सेवाएं समर्पित कर दीं।

जिस समय वे फोर्थ बैस्टिनमें थे, उस वक्त बेहद खतरेका अन्देशा होनेपर भी वे बड़ी प्रसन्नतापूर्वक अपने दिन काटते थे। जब उन्हें मिट्टीके झोंपड़ोंमें रहकर और सर्दी खा-खाकर दिन व्यतीत करने पड़े, उस समय उन्होंने सुन्दर सैन्य-संगठन और तोपखानोंकी व्यवस्थापर एक स्कीम तैयार की। उन्हें अपने देशवासियोंकी भलाईका बड़ा ख्याल था। फौजी सिपाहियोंकी भलाईके लिये वे एक अखबार निकालने वाले थे और जब अपने पहाड़ी तोपखानेकेसाथ वे खास मोर्चेपर गये, तो सैनिकों-की आवश्यकताओंको समझनेमें उन्होंने काफी दिलचस्पी दिखलाई। यद्यपि टाल्स्टायको अपने ऊपर बड़ा गर्व था और कभी-कभी छोटी-छोटी बातोंमें खिजला उठते थे तथा कुढ़ जाते थे, फिर भी उनके क्रीमियाके साथी

अफसर टाल्स्टायके आनन्दपूर्ण संसर्गका स्मरण अपने जीवनके अन्तिम दिनोंतक करते रहे हैं। एक अफसरने लिखा है—"युद्धके उन भीषण दिनोंमें टाल्स्टाय हमें अपनी शीघ्रतामें लिखी हुई कहानियां और पद्य सुना-सुनाकर जगाया करते थे। जब वे हमलोगोंके साथ होते थे, तो यह मालूम ही नहीं होता था कि समय कब बीत गया, प्रसन्नताकी तो कोई हद ही नहीं होती थी। जब काउन्ट (टाल्स्टाय) हम लोगोंसे दूर हो जाते, या घोड़ा दौड़ाकर सिम्फरपोल जा पहुँचते थे, तो हम लोग उदास हो जाते थे।"

दूसरे तोपखानेमें प्रसिद्ध था कि "वह अद्भुत घुड़सवार, खुशदिल साथी और ऐसे पहलवान थे, जो जमीनपर लेटकर पौने दो मन वजनके आदमीको अपने हाथोंपर खड़ा करके हाथ तानकर ऊपर उठा लेते थे। उनकी कितनी ही युक्तियुक्त और बुद्धिमत्तापूर्ण बातें और उनके कहनेके ढंग विस्मरण करनेकी चीज नहीं।

सैनिक जीवनसे उन्हें बड़ी निराशा हो गई थी।

नौकरीमें उनकी अवस्था भी दिनोंदिन खराब होती जा रही थी। सत्ताइस वर्षकी उम्रमें वे लेफ्टिनेन्ट बन गये थे और तबतक अधिकारियोंकी दृष्टिमें वे पूर्णतः मेल-मिलापी बन चुके थे। परन्तु सैनिक सफलता उनके भाग्यमें नहीं थी। उन्हें शीघ्र ही इस बातका अनुभव भी हो गया था कि उनका वास्तविक पेशा होना चाहिये—साहित्यिक कार्य। जिस आलस्यका वर्णन उन्होंने अपनी डायरीमें किया है, उसके होते हुए भी उन्होंने अपनी सैनिक सेवाके साथ-साथ कई सुन्दर रचनाएँ कीं। सन् १८५२ ई० में 'शैशवावस्था' प्रकाशित होनेके बाद सन् १८५३ ई० में 'कन्टेम्पोटेरी' नामक पत्रिकामें 'आक्रमण' रचना प्रकाशित हुई। इसके बाद सन् १८५४ ईस्वीमें 'बाल्यावस्था' और सन् १८५५ ई० में 'खिलाड़ी काष्टपतन', 'दिसम्बरमें सेवस्टापोल' और 'मईमें सेवस्टापोल' प्रकाशित हुई। सन् १८५६ ईस्वीमें 'अगस्तमें सेवस्टापोल', 'वर्फका तूफान' और 'दो हुसार' और 'मास्कोका एक परिचित' नामक रचनाएं अन्य पत्रिकाओं-में प्रकाशित हुई थीं।

टाल्स्टायकी कहानियों और निबन्ध रचनाओंने उनकी गणना रूसके सर्वाग्रगण्य लेखकोंमें करा दी और उनकी यह ख्याति समयके साथ बढ़ती ही गई। बादमें 'युद्ध और शान्ति' नामक उपन्यास प्रकाशित हुआ और तत्पश्चात् 'एना करेनिना' और 'अन्धकारकी शक्ति' प्रकाशित हुआ। अन्तमें 'अंगीकार' और 'क्या करें ?' तथा तेईस कहानियोंके प्रकाशनके बाद उन्हें ऐसी विश्व-ख्याति मिली, जैसी किसी भी रूसी लेखकको इसके पूर्व नहीं मिली थी। इन अन्तिम रचनाओंके द्वारा उन्होंने अपने विचार न केवल रूसमें ही प्रसारित किये, वरन् समस्त संसारके विभिन्न जाति, धर्म, समाज, संस्कृति, श्रेणी और भाषाओंके लोगोंतक पहुँचाकर उन्हें लाभान्वित करानेकी उच्च क्षमता प्राप्त की, और संसारके पंच महाद्वीपोंमें उनका नाम पढ़े-लिखे लोगोंके समाजमें विख्यात हो गया।

कन्टेम्पोटेरीके सम्पादक नेक्रासोवने जो अपने समयके प्रधान रूसी कवि भी थे, टाल्स्टायको सितम्बर सन् १८५५ ई० में लिखा था—'सत्यका जो रूप आपने

हमारे साहित्यमें प्रकट किया है, वह हम लोगोंके लिये नितान्त नूतन है। मैं ऐसे किसी भी लेखकको नहीं जानता, जो अपने लिये लोगोंके हृदयमें ऐसी गहरी सहानुभूति और प्रेम प्राप्त कर सका हो, जैसा आपने प्राप्त किया है और मुझे भय केवल इस बातका है कि समय तथा जीवनकी निकृष्टता एवं हमारे चारों ओर फैली हुई मूकता और बधिरता आपके लिये भी वैसी ही अनिष्टकारी सिद्ध होगी, जैसी हममेंसे अधिकांश लेखकों-के लिये हुई है। इस प्रकारकी प्रतिकूल परिस्थितियोंसे शक्तिका नाश हो जाता है, जिसके बिना कोई लेखक नहीं बन सकता—कमसे कम ऐसा लेखक तो नहीं ही बन सकता, जैसेकी आवश्यकता रूसको है।...... आप ऐसे ढङ्गसे कार्यारम्भ कर रहे हैं, जिससे बड़ेसे-बड़े सावधान व्यक्ति भी बाध्य होकर अपनी आशाओंसे दूर जा पड़ते हैं।'

नवम्बर १८५५ ईस्वीमें जब टाल्स्टाय पीटर्सबर्ग पहुँचे, तो उन्होंने देखा कि वहां वे एक प्रसिद्ध साहि-त्यिकके रूपमें विख्यात हो चुके हैं। १८५६ ईस्वीमें

छुट्टी लेकर टाल्स्टाय पिटर्सवर्ग, मास्को तथा याश्नामा पोल्यानामें दिन व्यतीत करने लगे। मास्कोमें उनकी मुलाकात अलैग्जैण्ड्रा थ्याकोवासे हुई जिसकी ओर वे अपनी आरम्भिक युवावस्थामें ही आकर्षित हो चुके थे। अलैग्जैण्ड्राने पीछे प्रिंस ऐण्ड्र आब्लेंस्की नामक एक व्यक्तिके साथ शादी कर ली। टाल्स्टाय और अलैग्जैण्ड्राके पुनर्मिलनने उन दोनोंके हृदयमें पूर्व-भावनाओंका उदय करा दिया, किन्तु राजकुमारी यह देखकर कि टाल्स्टायके प्रति उसका स्नेह बढ़ता ही जा रहा है, अपने बच्चोंको साथ ले पिटर्सवर्गको रवाना हो गई।

एक और ऐसी घटना हुई जिसका परिणाम बड़ा गम्भीर हुआ। पोल्यानाके निकट एक वैलेरिया नामक युवती रहती थी। टाल्स्टाय और वैलेरियामें परस्पर प्रीति बढ़ी और उनकी सगाई पक्की हो गई। अलैग्जेण्डर द्वितीय-का दरबार देखनेके लिये वैलेरिया मास्को गई और वहांपर मास्कोके आमोद-प्रमोद-मय जीवनमें प्रवाहित-सी हो गई। टाल्स्टायने वैलेरियाके साथ लम्बा पत्र-व्यवहार आरम्भ किया जिसके द्वारा टाल्स्टायको अधिकाधिक रूपसे यह

निश्चय होता गया कि वैलेरिया और वह एक दूसरेके लिए उपयुक्त जोड़ी नहीं हैं।

जब सगाई टूट गई, तो टाल्स्टायकी फूफी तातियानाने उन्हें बहुत कुछ बुरा-भला कहा, किन्तु युगल-जोड़ीका हृदय वास्तवमें एक दूसरेसे टूटा नहीं था और अन्तमें उन दोनोंकी शादी आनन्दपूर्वक हो गई और उनका परिवार खूब बढ़ा।

——::०❀०::——

गुलामोंकी मुक्ति

जिस समय टाल्स्टाय लड़ाईपर गये थे, उस समय भी वह गुलामोंकी मुक्तिके सम्बन्धमें अपने विचार अपनी डायरीमें लिखा करते थे, और सन् १८५६ ईस्वीमें पिटर्सबर्ग पहुँचकर उन्होंने अपने आपको इसी प्रश्नकी ओर लगा दिया। उनकी इच्छा किसी सरकारी प्रबन्ध या सुधारकी प्रतीक्षा किये बिना अपने गुलामोंको तुरन्त मुक्त कर देनेकी थी। उन्होंने तत्कालीन नरम दलके कार्यकर्त्ताओं और सरकारी मेम्बरोंसे इस मामलेमें राय लेनेके लिए मुलाकात की। उनकी इच्छा थी कि उनके

किसान अपनी जमीनके [illegible] अधिकारी बन जायँ, किन्तु ऐसा करनेके लिए वे आ[illegible] आप भारी क्षति भी उठानेके लिये तैयार नहीं थे। [illegible] कि इस कार्यमें एक बड़ी भारी बाधा यह थी कि उ[illegible] जमींदारी २० हजार रुबलको रेहन रखी हुई थी। [illegible]ल्स्टायने एक कार्य-क्रम तैयार किया, इसके सम्बन्ध[illegible] जाँच-पड़ताल की और इस काममें अपनेको पूर्णतः [illegible]गा दिया। उनके प्रस्तावोंमेंसे एक ऐसा था, जो स[illegible]रके लिए भी स्वीकार्य था। वे सन् १८५६ ईस्वीके [illegible]ई मासमें अपने प्रस्तावोंके साथ याश्नाया पोल्याना गये, और किसानोंके सामने यह स्कीम रक्खी जिसके द्वारा किसान उनके साथ यह ठेका करते कि उन्हें वह जमीन, जिसे वे जोतते-बोते हैं, तीस वर्षके लिए पट्टेपर मिल जाय। इस पट्टेके अनुसार किसानोंको लगभग दो रुबल प्रति एकड़ देना पड़ता, जिसमेंसे कुछ रकम तो रेहन छुड़ानेके लिये जमा होती रहती, और कुछ उनके (टाल्स्टायके) खर्च आती। चौबीससे तीस वर्षके अन्दर जब जमीन रेहनसे छूट जाती, तो वह सब-की-सब किसानोंकी जायदाद हो जाती। इस ठेकेके

शर्तनामेके साथ-साथ टाल्स्टाय और अपनी जमीनपरसे अपना मालिकाना अधिकार छोड़ देते।

टाल्स्टायने यास्नाया पोल्याना के किसानोंकी सभाएँ की, किन्तु उसका कोई सन्तोषजनक परिणाम नहीं निकला। किसानोंमें यह अफवाह फैल गई कि अलेग्जैण्डर द्वितीयके दरबारके अवसर (२६ अगस्त सन् १८५६ ई०) पर वे सब गुलामीसे मुक्त कर दिये जायेंगे, और उन्हें जमींदारीकी सारी जमीन मुफ्त मिल जायगी। इस प्रकारकी कठिनाइयोंका सामना करके टाल्स्टायको रूसकी दुःखद दशाका ज्ञान हुआ। टाल्स्टायने अपने एक मित्रके पास एक पत्र लिखा था, जिसमें उन्होंने गुलामोंके विषयमें जिक्र किया था कि 'गुलामोंकी मुक्तिके लिए कोई न कोई उपाय जरूर निकालना है। यदि छः महीनेके भीतर गुलाम मुक्त न किये गये, तो आग लग जायगी। इसकी सभी तैयारी हो चुकी है। वे विद्रोहियोंके द्वारा चारों ओर गदरकी चिनगारियां फैला देंगे और फिर सर्वत्र आग लग जायगी।'

साठ वर्षतक भविष्यवाणी चरितार्थ नहीं हुई। उस

समय जो कुछ हुआ, वह यही था कि सन् १८६१ ई० में गुलाम मुक्त कर दिये गये, और उन्हें महसूली जमीनके टुकड़े दे दिये गये, जिसकी क्षति-पूर्तिके रूपमें जमींदारोंको सरकारी बाण्ड मिल गये। इस बाण्डकी रकम सरकारने किसानोंपर लम्बे-लम्बे दुःखद कर लगाकर वसूल की।

सैनिक-सेवाका त्याग

छुट्टी समाप्त होते-होते टाल्स्टायने फौजसे इस्तीफा दे दिया। सन् १८५६ ई० में उनका इस्तीफा मंजूर हो गया। अब उन्हें विदेश-यात्राका शौक हुआ। कुछ दिन यास्नाया पोल्यानामें रहकर सन् १८५७ ई० के जनवरी मासमें वे पेरिसके लिये रवाना हुए। पेरिसमें उनका जीवन अपेक्षाकृत क्रियाशील और आनन्दपूर्ण रहा। वहां वे कितने ही रूसी सज्जनों और साहित्यिक लोगोंसे मिले। ६ मार्चसे १४ मार्चतक उन्होंने तुर्गनेवके साथ दिननकी सैर की।

उनकी विदेश-यात्राका प्रधान ध्येय संसारके विभिन्न-देशों और जातियोंका ज्ञान प्राप्त करना था। जिस समय वे पेरिसमें थे, उस समय एक आदमीको प्राणदण्डकी सजा हुई थी। उन्होंने उस कैदीको बध होते हुए देखा था। इस हृदय-विदारक दृश्यको देखकर उनका हृदय कांप उठा। उस समयका भाव उन्होंने लिखा है—"जब मैंने देखा कि उस अभागे मनुष्यका सिर धड़से पृथक् हो गया और सिर शब्द करता हुआ टोकनीमें गिरा, तो मुझे अच्छी तरह मालूम हो गया कि आज-कलकी सभ्यताकी सभी संस्थाएँ और उनकी विचार-शक्ति और सिद्धान्तको मिलाकर भी इस कार्यको उचित साबित नहीं किया जा सकता। यद्यपि बहुत पुराने समयसे यह कार्य होता आया है, तो भी मेरे विचारमें यह बुरा है, जो हर्गिज करना उचित नहीं है।"

पेरिसमें जब टाल्स्टाय ठहरे थे, उस समय उन्होंने एक पत्र अपने मित्रके यहां लिखा था—"मैं दो महीनेसे पेरिसमें ठहरा हूँ और मैं नहीं समझता कि इस नगरसे मेरी दिलचस्पी कभी कम होगी, या यहांका जीवन मेरे लिए आकर्षणकी चीज नहीं रहेगा। मैं घोर अज्ञानमें

हूँ, इस बातका परिचय मुझे कहीं अन्यत्र इस रूपमें नहीं मिला था, जैसा यहां मिला है। यदि केवल इसी कारण मुझे यहां रहना पड़े—खासकर उस हालतमें जब कि मैं समझता हूँ कि मेरी अज्ञानता यहां रहकर दूर हो सकती है—तो भी मैं यहां आनन्दपूर्वक रहूं। इसके अतिरिक्त ललितकलासे मुझे अत्यन्त आनन्द मिलता है—लांवर, वर्सेई, कन्सर्वेटाहर तथा कंसर्टथियेटरोंके दृश्यों और कालेज-दि-फ्रांस तथा सर्बोनके भाषणोंके अतिरिक्त यहांके सामाजिक-जीवनकी स्वच्छन्दता, जिसका कि हम रूसमें विचार भी नहीं कर सकते, ऐसे हैं जिनकी ओर मन बरबस आकर्षित हो जाता है। इस सब आकर्षणोंका परिणाम यह हुआ कि मेरे लिए पेरिस या इसके पार्श्व-वर्ती-ग्राम (जहां मैं दो महीने और रहनेके लिये जा रहा हूँ) छोड़ना मुश्किल होगा।"

किन्तु इस निश्चयके दूसरे ही दिन उन्होंने एक ऐसे आदमीको देखा, जिसका हाथ मशीनसे कट गया था। इस करुण दृश्यसे वे ऐसे प्रभावान्वित हुए कि वे उसी दिन जेनेवाके लिए रवाना हो गये और उसके दूसरे दिन

वहां पहुँच गये। जेनेवामें उन्होंने अपनी चचेरी बहनोंसे मुलाकात की, जिनमेंसे अलेग्जेण्ड्रा ए० टाल्स्टायसे उनको खास प्रेम था। उनके साथ टाल्स्टायका मित्रतापूर्ण प्रेम था। यह प्रेम कई वर्षों तक कायम रहा और इससे टाल्स्टायको काफी प्रसन्नता होती रही। वे टाल्स्टायसे ग्यारह वर्ष बड़ी थीं। "अगर अलेग्जैण्ड्रियाकी उम्र दस वर्ष कम होती!" टाल्स्टाय अपनी शादीके सम्बन्धमें विचार करते हुए कभी-कभी सोचा करते थे।

इन्हें स्विटजरलैण्ड बड़ा ही सुहावना मालूम हुआ। चारों तरफ वन्य प्रदेश, पर्वत मालाओंसे घिरी हुई घाटियां, नदियां, झरने, वर्फीली चोटियां दिखाई पड़ती थीं। यह स्थान उन्हें बड़ा ही पसन्द आया। टाल्स्टायने स्विटजर-लैण्डके भीतरी भागोंकी सैर की। कितने स्थानोंको पैदल चलकर देखा। कुछ सप्ताहोंमें स्विटजरलैण्डकी सैर करके फ्रैंक फोर्टसे चलकर ड्रेसडन, वर्लिन और स्टेरिन होते हुए टाल्स्टाय पिटर्सवर्गको लौट आये। उन दिनों वे बहुत-सी लड़कियोंके साथ नाच-गानेमें शामिल हुआ करते थे। उन दिनों रूसके नवयुवकोंमें जिम्नास्टिकका

बहुत प्रचार था। टाल्स्टायको भी अभिलाषा हुई कि वे अपने शरीरको ऐसा सुदृढ़ बनावें कि संसारमें कोई भी उनका मुकाबिला न कर सके। उनका शरीर व्यायामसे ऐसा बन गया था कि वे अच्छे पहलवान-से दीखते थे। उस समयका उनका सुदृढ़ शरीर अधिक अवस्था हो जाने और व्यायाम छोड़ देनेतक भी काफी सुन्दर और गठीला बना रहा। उन्हें गानविद्या और शिकारसे भी बेहद प्रेम था। गायन पार्टियोंने उन्हें ऐसा आकर्षित किया, कि उन्होंने एक स्थायी गायन-समाज स्थापित करनेकी व्यवस्था कर डाली, जिसके फल-स्वरूप मास्कोकी प्रसिद्ध सङ्गीतशालाका प्रादुर्भाव हुआ।

बड़े भाईकी मृत्युका शोक

टाल्स्टाय यूरोपका भ्रमण करनेके बाद मास्कोमें रहने लगे थे। इसी समय इनके बड़े भाई निकोलसका स्वास्थ्य खराब हो गया था। डाक्टरोंने यह बतलाया था कि निकोलस क्षयके रोगसे पीड़ित हैं। इसलिये

इन्हें सोडेन ले जाकर चिकित्सा करानी चाहिये। डाक्टरों-की रायसे निकोलस सोडेन गये और अपनी चिकित्सा कराने लगे। पहले तो कुछ लाभ अवश्य प्रतीत हुआ, मगर फिर रोगने जोर पकड़ लिया। जब उनकी बीमारी बिगड़ने लगी तो टाल्स्टायको बड़ी चिन्ता हुई। अब अपने भाईकी स्वयं सेवा करनेके लिये अपनी बहिनके साथ सोडेनके लिये रवाना हुए। अपनी बहिनको तो सीधे सोडेन भेज दिया, मगर स्वयं जर्मनीका चक्कर लगाते चले। जर्मनी जानेका उनका उद्देश्य यह था कि वह जर्मन-शिक्षा-प्रणालीका अध्ययन करना चाहते थे। वह अपने देशकी शिक्षाप्रणालीसे सन्तुष्ट न थे। इसलिये वह जर्मनी आदि देशोंकी शिक्षा-प्रणालीका ज्ञान प्राप्त करना चाहते थे। वे जहां-जहां जर्मनीमें गये, वहां वह स्कूलोंको देखते गये और उनकी विशेषताका निरीक्षण करते गये। परन्तु जर्मनीके स्कूलोंमें भी उन्हें कोई खास बात नहीं मिली। वहांकी पद्धतिसे भी इन्होंने अपना असन्तोष प्रकट किया। जर्मनीमें प्रत्येक पाठ्य-विषय लड़कोंको कण्ठाग्र कराया जाता था, जिसे टाल्स्टाय

बिलकुल पसन्द नहीं करते थे। टाल्स्टायका ख्याल था कि रटानेवाली विद्यासे शक्ति क्षीण होती है और बुद्धिका विकास नहीं होता। जर्मनीमें टाल्स्टायने सभी बड़े-बड़े विद्वानों और लेखकोंसे भेंट की।

जबतक टाल्स्टाय सोडेन पहुँचे, तबतक उनके भाई-की तबीयत बहुत खराब हो चुकी थी। इसलिये वे उन्हें फ्रांसके समुद्रतट शायवियरा ले गये। परन्तु यहांपर भी निकोलसकी बीमारी हल्की नहीं हुई और ज्यादा बढ़ती गई और अन्तमें वे यहींपर मर गये।

भाईकी मृत्युसे टाल्स्टायको बड़ी गहरी चोट आई। टाल्स्टाय अपने बड़े भाई निकोलसको अपना गुरु समझते थे। निकोलस उनके लिए पितासे कम नहीं थे। बड़े भाईने भी टाल्स्टायको बहुत माना था। जब इन लोगोंके पिताकी मृत्यु हुई थी तब टाल्स्टाय छोटे थे। इस प्रकार घरमें बड़े होनेके नाते निकोलसका विशेष प्रेम अपने सबसे छोटे भाई टाल्स्टायपर था। टाल्स्टायने अपने एक मित्रको निकोलसकी मृत्युके ऊपर लिखा था—"निकोलस कहा करते थे कि मौतसे बढ़कर संसारमें

और कोई खराब वस्तु नहीं है। अब मुझे अनुभव हो गया कि उनका कहना बिल्कुल ठीक था। जब मृत्युसे ही इस जीवनका अन्त हो जाता है तो यह जीवन बिल्कुल व्यर्थ प्रतीत होता है। यदि निकोलसके लिये इस संसारमें मृत्युके कारण दुनियाकी चीजें निःसार हो गईं तो उनका इस जीवनके साथ लड़ना और सांसारिक चीजोंके पानेका उद्योग करना बेकार था। उन्होंने मुझसे यह नहीं कहा था कि वे इस बातका अनुभव कर रहे हैं कि मौत नजदीक आती जाती है, फिर भी मुझे मालूम है कि वह मौतको अपने नजदीक बढ़ते देखते थे और उसके नतीजेको भी समझते थे। मरनेके कुछ समय पहले उनको झपकी-सी आ गई और उस झपकीसे एका-एक चौंककर वे बोल उठे—'यह क्या है ?' उन्होंने मौतको साफ देखा और यह अनुभव किया कि वे इसके कारण अन्धकारमें डूबे जा रहे हैं। अगर निकोलस हीको मृत्युसे बचनेका कोई रास्ता न मिला तो मुझे क्या मिलेगा ? क्या ऐसी हालतमें, जब मृत्यु सदैव हमारे सिरपर मौजूद है, तो कष्ट उठानेसे कोई लाभ है ?

कितने आश्चर्यकी बात है कि लोग दूसरोंसे कहते हैं कि जबतक तुम जिओ, सुखसे जिओ। दूसरोंके लिये उपयोगी बनो। परन्तु उपयोगिता, सच्चरित्रता और सुख सब एक ही सत्यमें निहित है और बत्तीस वर्षके जीवनके बाद मैंने यही सत्य पाया है कि हमारे जीवनकी दशा बहुत भयानक है।"

इस पत्रसे मालूम होता है कि वे अपने भाईकी मृत्युसे बिलकुल घबड़ा गये थे। उनका हृदय सिहर उठा था। परन्तु यह उस समयकी बात है, जब कि वह स्वयं जीवन और मृत्युके प्रश्नको समझ नहीं सके थे। भाईके मरनेपर भी वह किं-कर्त्तव्य-विमूढ़ नहीं हुए। जिस शिक्षा-प्रणालीका अध्ययन उन्होंने आरम्भ किया था, उसका अध्ययन करनेके लिये वे फ्रांस, इङ्गलैण्ड आदि देशोंको गये और वहांकी शिक्षा-प्रणालीको देखने लगे।

जब यूरोपकी यात्रा करके टाल्स्टाय दूसरी बार लौटे, तबतक उनके देशमें एक प्रश्न नये सिरेसे उठ खड़ा हुआ था। यह प्रश्न था, किसानोंका। टाल्स्टायने

इस प्रश्नको बहुत पहले ही उठाया था। अपनी जमींदारीके किसानोंके लिए इन्होंने एक स्कीम पहले भी तैयार की थी। उनकी हालतको सुधारनेका भी प्रयत्न किया था। परन्तु राज्य-शक्ति तथा सरदारोंके विरोधसे उनका कार्यक्रम बहुत कुछ सफल नहीं हुआ। प्रायः सभी रूसी-किसान जमींदारोंके गुलाम थे। जमीन बेचनेके साथ वे भी बेच दिये जाते थे। इस प्रथाको उठानेके लिए कई बार आन्दोलन हुए, परन्तु बादशाहकी उदासीनता और नौकर-शाहीके जुल्मोंसे आंदोलन करने-वाले हमेशा दबा दिये जाते थे। सन् १८५५ ई० में पुराने जार निकोलस प्रथम मर गये और उनकी जगहपर एलेक्जेण्डर गद्दीपर बैठे। यह अच्छे विचारक थे। इनके गद्दीपर बैठते ही लोग सुधार-सुधार चिल्लाने लगे। बड़े-बड़े सरदार और जमींदार सुधारके विरोधी थे। क्योंकि सुधारोंसे इनके स्वार्थोंपर धक्का लगता था। नये बादशाहने इन लोगोंको भी सुधारके पक्षमें लानेका प्रयत्न किया। बादशाहने बड़े-बड़े सरदारोंकी कमेटी नियुक्त की और उन्हें सुधारका काम सौंपा।

इस कमेटीने तीन सालतक काम किया। फिर सन् १८६१ ई० में दासोंकी गुलामीसे छूटनेकी घोषणा की गई।

आन्दोलनके समय टाल्स्टायने खूब काम किया। पत्रों और पत्रिकाओंमें लेख लिख-लिखकर लोगोंको उत्साहित किया। कई कहानियां लिखीं, जिनमें गुलामोंकी करुण-दशाका बड़े ही मार्मिक शब्दोंमें वर्णन किया। पोलीकोराका नामक कहानी तो इतनी मार्मिक थी कि उसे जिसने पढ़ा उसीका हृदय पसीज उठा था। इस नई घोषणाके अनुसार छोड़े हुए दासों और जमींदारोंके बीच अच्छा सम्बन्ध स्थापित करनेके लिए प्रत्येक प्रान्तमें पंच मुकर्रर किये गये। इन पंचोंमें एक टाल्स्टाय भी थे। टाल्स्टायने गुलामोंका पक्ष लिया, जिससे बहुतसे सरदार इनके विरोधी हो गये और चुपके-चुपके वे लोग इनकी शिकायतें गवर्नमेंटके पास भेजने लगे। अन्तमें लाचार होकर इन्हें अपने पदसे इस्तीफा देना पड़ा।

इसके बाद टाल्स्टायने शिक्षाका काम अपने हाथमें

लिया, अपने गांवसे ही शिक्षाका काम प्रारम्भ किया। चारों तरफ भ्रमण करनेके बाद शिक्षाका उपयुक्त ढङ्ग क्या होना चाहिये, टाल्स्टायने स्वयं निर्धारित किया और उसे वे कार्यरूपमें परिणत करने लगे। टाल्स्टायने स्वयं ही उसके बारेमें लिखा है—"स्कूल ईंटके बने हुए एक दो मंजिले गृहमें हैं। दो कमरोंमें दर्जे लगते हैं। दो कमरे अध्यापकोंके लिये हैं और एक कमरेमें विज्ञान सम्बन्धी वस्तुएँ रखी जाती हैं। दरवाजेपर रस्सीसे लटकता हुआ एक घण्टा रहता है। नीचेके तल्लेमें जिमनास्टिक करनेका पैटोलेल और होरीजेण्टलबार लगे हुए हैं। ऊपरके जीनेके पासवाले कमरेमें बढ़ईका सामान रखा है। बड़े कमरेमें कार्यक्रम टँगा हुआ है। वह इस प्रकार है—

"आठ बजे अध्यापक एक लड़केसे जो स्कूलमें ही रहता है, घंटा बजानेको कहता है। घण्टेके बजनेके कुछ ही देर बाद गांव और स्कूलके बीचवाले खड्डोंमें चढ़ते हुए कितने छोटे-छोटे बच्चे दिखलाई पड़ने लगते हैं। चाहे कुहरा हो या पानी बरसता हो, ये लोग अवश्य

ही आते हैं। ये लोग एक-एक या दो-दो करके आते हैं। भेड़ोंकी तरह झुण्डमें चलनेका भाव उनके दिलसे हटा दिया गया है। जो कुछ उन्होंने अभीतक पढ़ लिया है, उसके कारण वे अधिक स्वाधीन हो गये हैं। वे अपने साथ न तो अधिक किताबें लाते हैं और न कापियां। उन्हें घरपर करनेके लिए कुछ काम नहीं दिया जाता। उनको काम करनेके लिये डराया-धमकाया नहीं जाता। बच्चे स्कूलमें कोमल हृदय लेकर इसी विश्वासके साथ आते हैं कि स्कूलमें आज भी उतना ही आनन्द आयेगा, जितना कि कल मिला था। वे अपने पाठपर पढ़नेसे पहले विचार भी नहीं करते। देरसे आनेके लिये उन्हें दण्ड भी नहीं दिया जाता। वे देरसे भी नहीं आते। हाँ, जबतब बड़े लड़के किसी आवश्यक कार्यसे घरपर भले ही रुक जाते हैं, परन्तु कामसे फुर्सत मिलते ही स्कूलको दौड़े आते हैं।

स्कूलके स्थापित होनेके कुछ दिनों बाद टाल्स्टायकी तबीयत कुछ खराब-सी रहने लगी। स्वास्थ्य सुधारनेकी आवश्यकता प्रतीत हुई। इसलिए वे हवा बदलनेको दूसरी

जगह चले गये। इधर पुलिसने सन्देहमें उनके घर और स्कूलकी तलाशी ली। इस तलाशीसे गांववाले बिल्कुल डर गये। उन्होंने अपने लड़कोंको स्कूलमें भेजना बन्द कर दिया।

इनके स्कूलके आधारपर और भी स्कूल खुले। इनका उद्योग सफल होता हुआ मालूम पड़ने लगा। लेकिन वहांकी सरकार टाल्स्टायके विचारोंसे परिचित थी। सरकारको डर हुआ कि टाल्स्टायके इस कार्यसे रूसमें साम्यवादका प्रचार न हो जाय। इसलिए सरकारने शिक्षा-विभागसे टाल्स्टायकी इस नई पद्धतिके अनुसार स्थापित स्कूलोंके विषयमें रिपोर्ट मांगी। शिक्षाविभागने जांच-पड़तालके बाद सरकारको यह रिपोर्ट दी कि टाल्स्टाय-पद्धति बड़ी ही उपयोगी और उपयुक्त पद्धति है और शिक्षा-विभागको इस पद्धतिके सफलीभूत होनेमें सहयोग देना उचित है। यद्यपि शिक्षा-विभाग टल्स्टायकी सभी रीतियोंसे सहमत नहीं था, पर बहुत सम्भव है कि विचार विनिमयके बाद टाल्स्टाय अपनी पद्धतिमें कुछ परिवर्तन करनेके लिये तैयार हो जाते। परन्तु सरकारको

शिक्षा-विभागकी सिफारिश मंजूर नहीं थी। सरकारने टाल्स्टायकी पद्धतिवाले स्कूलोंके मास्टरोंको धमका कर स्कूलोंसे अलग कर दिया। लड़कोंके मां-बापको डराया गया कि वे अपने लड़कोंको इन स्कूलोंमें न भेजें। अन्तमें इस प्रकार सरकारके द्वारा जलील होकर टाल्स्टायने स्कूल बन्द कर दिया।

उनकी गृहस्थी

टाल्स्टायका स्वास्थ्य सुधर गया। वे घर लौट आये। बहुत सोच-विचार करनेके बाद उन्होंने अपनी शादी कर ली। उस समय टाल्स्टायकी अवस्था चौंतीस वर्षकी थी। इस समय उन्होंने बहुत सुन्दर-सुन्दर कहानियां तथा उपन्यास लिखे। पत्रोंमें कई लेख लिखे जिनको रूसी जनताने बहुत पसन्द किया। टाल्स्टायका जीवन दीन-दुखियोंकी सेवामें सदैव लगा रहता था। जहां कहीं उनकी सहायताकी जरूरत होती वे सहायता

करनेके लिये तैयार रहते थे। उनके गांवके निकट ही एक फौजी पड़ाव था। उस फौजका कप्तान बड़ा निर्दयी था। वह सिपाहियोंसे बड़ी बुरी तरहसे पेश आता था। एक सिपाहीसे उसे खास चिढ़ थी। एक दिन किसी मामूली बातपर उस सिपाहीको उसने मारा। सिपाही भी उस अपमानको सह न सका और उसने भी अपने अफसरको खूब पीटा। सिपाहीके ऊपर फौजी अदालतमें मुकदमा चला। उसकी सहायताके लिये कोई तैयार न था। इसकी खबर टाल्स्टायको लगी और वे उसकी पैरवी करनेके लिये तैयार हो गये। परन्तु फौजी अदालतने कहा कि यह मुकदमा बड़ा गम्भीर है, आप इसमें पैरवी नहीं कर सकते। इसपर टाल्स्टायने कहा कि इस आदमीका अपराध गम्भीर नहीं है क्योंकि इसने अपने अफसरके ऊपर तभी हाथ उठाया, जब इसके ऊपर अधिकसे अधिक मार पड़ी। अन्तमें टाल्स्टायकी पैरवीका कुछ फल नहीं हुआ। फौजी अदालतने उसे गोली मार देनेकी सजा दी। इसपर भी टाल्स्टायने उसकी रक्षाका प्रयत्न किया, परन्तु सब बेकार हुआ। उसे गोली मार दी गई। इसका उनपर

बड़ा ही प्रभाव पड़ा। इस प्रकारके दण्डको वह ईसाई-धर्मके विरुद्ध समझते थे।

सन् १८६३ ई० में टाल्स्टायको एक पुत्र हुआ। इसके बाद उन्हें कई बच्चे हुए। बच्चोंके लालन-पालनका उन्हें स्वयं ख़्याल था। उनकी शिक्षा और दिक्षाका उन्होंने सुन्दर प्रबंध किया था। उन्हें पालने-पोसनेके लिये अंग्रेज और जर्मन धायें रखीं। स्वयं भी समय निकालकर बच्चोंके साथ हिल-मिलकर खेलते और खेलाते थे। उन्हें स्वयं पढ़ाते भी थे। वह अपने बच्चोंको न पीटते थे और न किसी दूसरेको ही उनके बच्चों को पीटनेका अधिकार था। यदि कोई बच्चा अपराध करता, तो उसका बहिष्कार किया जाता था और वह बहिष्कार तबतक होता था, जबतक कि वह बच्चा अपना अपराध स्वीकार न कर लेता। टाल्स्टाय खूब शारीरिक परिश्रम करते और अपने बच्चोंको भी परिश्रमी बनानेका प्रयत्न करते थे। अपनी खेतीमें भी खूब दिलचस्पीके साथ काम करते थे। अपने खेतोंको देखने जाते थे। वहां कभी हल चलाते थे, फावड़ा चलाते थे,

बागकी क्यारियां ठीक करते थे तथा घास साफ किया करते थे। इनकी देखा-देखी इनके बच्चे भी यही काम करते थे।

अपने गार्हस्थ्य-जीवनमें टाल्स्टाय बिल्कुल नगरोंसे दूर देहातोंमें गरीब किसानोंके साथ हिल-मिलकर रहते थे। दुनियाकी शांति उन्हें वहीं प्राप्त होती थी। इसी समय उन्होंने साहित्यको अमरकृतियोंसे भर दिया। उनके उस समयके कुछ उपन्यास संसारके अमर-ग्रंथोंमें माने जाते हैं। 'वार एण्ड पीस' (युद्ध और शांति) तथा 'एना केरेनिना' बड़े महत्वपूर्ण उपन्यास हैं। ये उपन्यास रूसी भाषामें अपने ढंगके निराले हैं। इन दोनों ग्रंथोंकी रचनासे टाल्स्टायका बहुत नाम हो गया। निस्संदेह अब वह संसारमें अमर-कलाकारों और साहित्यिकोंमें गिने जाने लगे। इनके ये उपन्यास संसारकी प्रायः सभी प्रमुख भाषाओंमें प्रकाशित हो चुके हैं। इनके इन ग्रन्थोंने संसारमें युद्ध और अत्याचारके विरुद्ध जनमत तैयार करनेमें बड़ा काम किया। हरएक देशके सभ्य और सुसंस्कृतजनोंमें युद्धके विरोधकी भावना आने लगी। लोग युद्धको

बर्बरता और जंगलीपन समझने लगे। मानव समाजका ध्येय संसारमें शांति करना है।



टाल्स्टायका जीवन-परिवर्तन

टाल्स्टायने एक जायदाद समारा नामक स्थानमें खरीदी। वहां उन्हें सन् १८७३ ई० तक रहनेका अवसर मिला। वहां एक बार अकाल पड़नेवाला था। उनका ख्याल था कि अकाल पड़नेके पहले कुछ ऐसा प्रयत्न होना चाहिये ताकि अकाल न पड़े और यदि अकाल हो भी जाय, तो उससे लोगोंको बहुत तकलीफ न हो। सरकारका भी ध्यान आकर्षित किया गया, पर इसका कोई भी नतीजा नहीं हुआ। गांव-गांवमें घूमकर लोगोंकी हालतोंको देखा और उसकी रिपोर्ट मास्को गजटमें प्रकाशित करायी तथा सहायताके लिये लोगोंसे अपील की। थोड़े ही समयमें अकाल-पीड़ितोंकी सहायताके लिये काफी धन इकट्ठा हो गया। टाल्स्टायके इस परिश्रमसे गरीबोंका बड़ा लाभ हुआ। इनका नाम भी चारों तरफ जनतामें प्रचरित हो गया।

अब इन्हें लोग दीनबंधु कहने लगे। किसानोंकी हालत दिनोंदिन खराब होती जा रही थी। लोग नये-नये करोंके भारसे दबे जा रहे थे। प्रजाके कष्टोंकी तरफ किसी-का ध्यान नहीं जाता था। राज्यके अधिकारी और जार भी चुप-चाप तमाशा देखते थे। लोगोंमें क्रोध और घृणाका प्रचार होने लगा। इसका फल यह हुआ कि सन् १८८१ ई० के मार्च महीनेमें कुछ षड्यंत्रकारियोंने एलेकजेण्डरको मार डाला। इससे सारे रूसमें हलचल मच गई। चारों तरफ लोग पकड़े जाने लगे। टाल्स्टायने देखा कि दोनों पक्ष, राजा प्रजा गलती पर हैं। इसलिये उन्होंने नये जार एलेकजेण्डर तृतीयसे अपील की कि हत्याकारियोंको क्षमा कर दिया जाय, इसका बड़ा अच्छा प्रभाव होगा। परन्तु जारने इनकी बातोंपर तनिक भी ध्यान नहीं दिया। हत्याकारी लोगोंमें बहुतसे फांसीपर लटका दिये गये और बहुतसे साइबेरियाके जेलमें जन्मभरके लिये सड़नेको भेज दिये गये।

चारों तरफ उथल-पुथल मची हुई थी। लोगोंपर

अत्याचार हो रहे थे। टाल्स्टाय गांवोंमें गरीबोंकी सेवा अपने ढङ्गसे कर रहे थे। उनके मनमें शान्ति नहीं थी। गांव छोड़कर मास्को चले आये। मास्कोके जीवनमें उन्हें ऐसा मालूम हुआ कि वह स्वयं इस समाजमें रहकर और चुपचाप 'जो मिल जाय वह खा लें' पद्धतिसे जीवन व्यतीत करके अत्याचारमें बाधा न देनेके कारण पापमें सहायता दे रहे हैं। उन्होंने देखा कि नागरिक लोग खूब मौजसे जीवन व्यतीत करते हैं। वे दुःखका नाम नहीं जानते। दिन-रात उनके लिये एक तरह है। दूसरी ओर सब लोग मानों थोड़ेसे लोगोंके आरामके लिए सामग्री जुटानेके लिए ही पैदा हुए हैं। उन्हें पेटभर खानेको नहीं मिलता। नगरोंके विलासपूर्ण जीवनके साथ-साथ देहातों-की तथा उन अकाल-पीड़ित जनताकी, जिनके घरमें खानेके लिए अन्न नहीं, पहननेको वस्त्र नहीं, अपनी हालत समझनेके लिए बुद्धि नहीं, हालत देखकर वे घबड़ा गये। गरीबोंकी दशापर उन्होंने खूब विचार किया। अन्तमें वे इस नतीजेपर पहुँचे कि हमें इस तरह रहनेका कोई हक नहीं है। हमें जिन्दगी बितानेका क्रम बदलना

होगा। उन्होंने यह निश्चय कर लिया कि जबतक समाजमें क्रान्ति न होगी, तबतक कोई सुधार नहीं हो सकता। उन्होंने गरीबोंकी आवश्यकताओंपर विचार किया। काम करनेका ढङ्ग भी निश्चित किया और उसीके अनुसार काम भी करते थे। उनका ख्याल था कि कुछ गरीब ऐसे हैं, जिन्हें दान और दया दिखलानेकी जरूरत नहीं है, बल्कि उन्हें स्वाभाविक तौरपर परिश्रम करना सिखाना है। कुछ लोगोंको यह बतलाना जरूरी है कि जीवनको किस तरह पवित्र बनाना चाहिये। टाल्स्टायका दृढ़ मत था कि संसारकी बुराइयोंका एकमात्र कारण रुपया है। यह एक ऐसा यन्त्र है, जिसका दबाव आसानीसे हो सकता है। टाल्स्टाय अपने सिद्धान्तके अनुसार अपने जीवनको भी ढाल चुके थे। इसीलिये वह कहा करते थे, अपने कियेपर पछताओ। अपने जीवनका ढङ्ग बदल डालो। अपने रुपये-पैसेमें एकाध पैसा किसी गरीबको दो या न दो, परन्तु उनकी मुसीबतमें और उनके परिश्रमी-जीवनमें भाग लो।

उन्होंने अपना दैनिक-कार्य भी निश्चित कर लिया

था—दिनके पहले भागमें वे लिखने-पढ़ने, सोचने-विचारनेका काम करते थे, दूसरे भागमें शरीरसे कठिन काम करते और दिनका चौथा भाग लोगोंके साथ मिलने और उनकी दशा देखनेमें बिताते थे। अपने स्वभावमें भी परिवर्तन करना आरम्भ किया। वे बहुत अधिक नम्र बन गये। क्रोध करना छोड़ दिया। लोगोंके साथ प्यारसे मिलते और प्यारभरी बातें करते। घमण्डको अपने पास फटकने नहीं देते थे। इस प्रकार अपने जीवनको उन्होंने एकदम पवित्र बना डाला।

कुछ दिन मास्कोमें रहकर वे पुनः अपने गांवपर चले आये। यहां आकर उन्होंने शिक्षा-प्रद कहानियां लिखीं। इनके मतके माननेवालोंने 'यास रेनडिनक' नामक समिति कायम की, जिसके द्वारा टाल्स्टायको कहानियां प्रकाशित होने लगीं। इनकी पुस्तकोंकी जनतामें बड़ी मांग थी। नई पुस्तकके छपते ही संस्करण समाप्त हो जाता। इस तरह थोड़े दिनोंमें ही प्रकाशन समितिने टाल्स्टायकी कहानियोंकी दस लाख प्रतियां बेची थीं।

महात्मा टाल्स्टाय जहां भी रहे, उनके जीवनका

ढङ्ग सादा था। मास्कोमें भी रहते समय वे गरीबोंके साथ लकड़ी काटते, पानी भरते और जूता बनाते थे। वे स्वयं अपना बनाया जूता पहनते थे और अपने सिरपर गठरी रखकर पैदल चलते थे। गांवोंमें तो लकड़ी काटते, हल जोतते तथा अन्य छोटे-छोटे कार्य गरीबोंके साथ मिलकर करते थे।

रूस भी भारतवर्षकी तरह एक कृषि-प्रधान देश है। यहांके लोग भी खेतीपर निर्भर करते हैं। जब कभी वर्षाकी कमी होती या पाला पड़ता तो खेती नष्ट हो जाती। लोग अकालसे मरने लगते। सन् १८९१ ई० में ऐसी ही हालत हुई। वसन्त ऋतुमें जाड़ेकी फसल खराब हो गई। टाल्स्टायने देखा कि लोग अकालसे बेमौत मर जायेंगे। पहले ही इन्होंने अकालियोंकी सहायता प्रबन्ध किया। ये स्वयं घूम-घूमकर लोगोंकी हालत देखने लगे। इनके पास कुछ रुपये थे, इसीसे काम शुरू कर दिया। उनके इस सेवाकार्यकी खबर चारों ओर हो गई। जो लोग अकाल-पीड़ितोंकी सेवा करना चाहते थे, उन्हें लेख लिखकर, व्याख्यान देकर तथा अपने साथ रखकर मार्ग

निदर्शन करते थे। जिन किसानोंके घरमें थोड़ी बहुत जायदाद थी, उसकी रक्षाकी आवश्यकता थी। दुर्भिक्षके दिनोंमें लोग दूसरेके घरोंमें चोरी डाका डालने लगे थे। इसका भी उपाय टाल्स्टायने किया। जिन्हें खाने-पीनेकी सामग्री नहीं थी, उन्हें खाने-पीनेका सामान मिला। जिन्हें कपड़ोंकी जरूरत थी उन्हें कपड़े दिये। पत्रोंमें लेख लिखकर लोगोंसे प्रार्थना की कि इस सत्कार्यमें लोग हाथ बँटावें। बहुतसे लोग टाल्स्टायके काममें हाथ बँटाने लगे। कितने भोजन करनेके केन्द्र खोले गये। प्रतिदिन १२००० से ऊपर आदमियोंको भोजन देनेका प्रबन्ध हुआ था। किसानोंके लिये भी नये-नये काम ढूँढ़ निकाले गये थे। टाल्स्टायके सभी लड़के तथा इनकी स्त्रीने भी इस कार्यमें हाथ बँटाया था। इसी समय टाल्स्टायने "स्वर्गका राज्य तुम्हारे अन्दर है" नामक पुस्तक लिखकर उस समयके रूसी शासन व्यवस्थाकी पूरी आलोचना की थी।

इस पुस्तकके प्रकाशित होते ही लोगोंमें इसका प्रचार बढ़ने लगा। रूसी सरकारने इस पुस्तकको अरा-जकता प्रचार करनेवाली पुस्तक समझकर जब्त कर

लिया। इस समयका 'स्वामी और सेवक' नामक उपन्यास भी प्रसिद्ध है। इस पुस्तकमें टाल्स्टायने दिखलाया है कि सेवक अपने स्वामीके सुखके लिए कितना परिश्रम करता है फिर भी स्वामीका हृदय उसकी तरफ नहीं ढलता। इसलिए स्वामीको चाहिये कि वह सेवकके लिए सब कुछ करनेको तैयार रहे।

रूसमें भोर नामकी एक जाति रहती थी। ये दुःखी भोर कहलाते थे। यह नाम ईसाइयोंने इसलिए रखा था कि ये लोग ईश्वरके साथ युद्ध करनेवाले समझे जाते थे। पर ऐसी बात नहीं थी। इनका सिद्धान्त था कि प्रत्येक जीवपर दया करनी चाहिये। सबके साथ प्रेमका भाव बरतना चाहिये। ये व्यक्तिगत धन रखना पाप समझते थे। उनकी जातीय सम्पति होती थी, जिससे सभीका काम चलता था। वे अपने सिद्धान्तोंके बड़े कट्टर थे। वे अपने विचारोंके लिए कठिनसे कठिन यातना सहनेके लिए तैयार रहते थे। वे सरकारकी उन आज्ञाओंको भी माननेसे इनकार कर देते थे जो उनके सिद्धान्तके प्रतिकूल होती थीं। एक बार सरकारने उन्हें सेनामें भर्ती

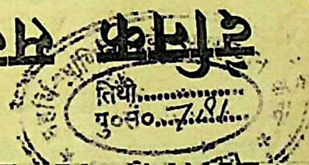
होनेकी आज्ञा दी। उनके सिद्धान्तके अनुसार युद्ध करना पाप था। अतः वे सेनामें भर्ती नहीं हुए। जारने उन्हें काकेशस पहाड़के निकट जंगली जातियोंमें रहनेके लिए आज्ञा दी। अपने जन्मस्थानको छोड़कर उन्हें जंगलकी शरण लेनी पड़ी। परन्तु वहां भी ये जंगली जातियोंसे बिलकुल हिलमिल गये। कुछ दिनोंके बाद उनमें भी बुराइयां आ गईं। वे भी हथियारका प्रयोग करने लगे। इसलिए सरकारने पुनः उन्हें सेनामें भर्ती करना चाहा। उन्हें अपनी गलतीका भान हुआ और अपने हथियार इकट्ठा करके उनपर तेल छिड़ककर आग लगा दी। सरकारको इनके कार्योंसे बड़ी चिढ़ मालूम हुई और इन्हें हर तरहसे तंग करना शुरू किया। टाल्स्टायने इनके ऊपर किये गये अत्याचारोंको सुना। उनका हृदय पिघल उठा। उन भोरोंका असीम धैर्य और अत्याचारोंके सहन करनेकी शक्तिकी भी हद थी। टाल्स्टाय उनकी सहायताके लिए तैयार हो गये। सरकारने भोरोंको एशियाई रूसके सूखे और बञ्जर प्रदेशमें रहनेके लिए बाध्य किया। टाल्स्टायने उनकी सहायताके लिए अपील छपवाई, जिसमें बहुतसे

उसे दूसरे खुशीसे दे देंगे क्योंकि उन्हें अन्नकी रहेगी। उन्हें ऐसा करना ही पड़ेगा, क्योंकि अन्न अपील होने की वस्तु न होनेके कारण उसका और कोई ... पा हो सकेगा। उस अवस्थामें अपने पेटके लिये ... का छल या मारपीट करनेकी जरूरत न पड़ेगी। ऐसी ... आ में भी यदि मनुष्य छल-कपट या बदमाशी न छोड़सके यही कहना होगा कि उसे इन बातोंसे स्नेह है—य इनकी कोई आवश्यकता नहीं है। आजकल जो बलवान लिये अन्न पैदा करनेकी मिहनत वेचारे शक्तिहीनोंसे ... जाती है, वह बात भी फिर न रहेगी। महात्मा टाल्स्टायने संसारका बड़ा उपकार किया है। यहांपर थोड़ासा उदाहरण उनके उपदेशोंका है। यह बहुत आवश्यक और उपयोगी है। यदि इस नियमके अनुसार लोग चलेंगे तो सन्देह नहीं कि संसारसे तीन चौथाई पाप दूर हो जायगा।









...यल पर हमारे स्टाल ...

... के लिए कैसेट कवर पर  का निशान अवश्य देखें



